अन्तरा-शब्दशक्ति

हादसा

संस्मरण

राधा गोयल

हादसा

(संस्मरण)

राधा गोयल

अन्तरा-शब्दशक्ति प्रकाशन

वारासिवनी, मध्यप्रदेश

ISBN- "978-93-86666-71-0"

अन्तरा-शब्दशक्ति प्रकाशन
मुख्य कार्यालय - १५ नेहरु चौक वारासिवनी, जिला बालाघाट (म.प्र) ४८१३३१
दूरभाष- (कार्या.) ०७६३३-२५३१५९ (मो) ९४२४७६५२५९
अणुडाक- antrashabdshakti@gmail.com
अंतरताना- www.antrashabdshakti.com
प्रथम संस्करण २०१९- राधा गोयल
मूल्य - ६०.०० रुपये
आवरण चित्र- संदीप सोनी, वारासिवनी
मुद्रक- शैलू कम्प्यूटर्स, वारासिवनी

HADASA BY RADHA GOYAL

वैधानिक चेतावनी - इस पुस्तक का सर्वाधिकार सुरक्षित है। लेखक की लिखित अनुमति के बिना इसके किसी भी अंश को फोटोकापी एवं रिकार्डिंग सहित इलेक्ट्रोनिक अथवा मशीनी किसी भी माध्यम से अथवा संग्रहण और पुनर्प्रयोग की प्रणाली द्वारा किसी भी रूप में पुनरुत्पादित अथवा संचारित प्रसारित नहीं किया जा सकता है। प्रस्तुत पुस्तक की समस्त रचनाएँ लेखक द्वारा अन्तरा शब्द शक्ति प्रकाशन को प्रेषित की गई है अतः प्रत्येक रचना की मौलिकता के किसी भी दावे हेतु लेखक जिम्मेदार है। प्रस्तुत पुस्तक के घटनाक्रम पात्र, भाषाशैली एवं स्थान सभी लेखक की कल्पना है। किसी भी प्रकार के वाद-विवाद के लिए प्रकाशक का सहमत होना अनिवार्य नहीं है।

हादसा

जिन्दगी में कभी-कभी ऐसे हादसे हो जाते हैं, जो जिन्दगी के सारे सपनों को ही धूल में मिला देते हैं। ऐसा अनेक लोगों के साथ होता है। मेरे साथ भी हुआ। लेखन का बहुत शौक था, लेकिन कहाँ प्रकाशित करवाना है, यह पता नहीं था। कुछ समय का भी अभाव था। सोचा था, कि रिटायरमैण्ट के बाद अपने सपनों को पूरा करूँगी, लेकिन शायद किस्मत को यह मंजूर नहीं था। हादसे तो कई हुए, लेकिन दो हादसों ने जीवन को बुरी तरह हिला कर रख दिया।

पहला तब जब 08/0819/95 में हुआ। पहले जो रचना मैं पाँच मिनट में रच लेती थी और कलम चलना शुरू होती थी, तो रुकने का नाम नहीं लेती थी। अब यह हाल है कि समय ही समय है, मगर दिमाग नहीं है।

आपबीती

08/08/1995 का वह मनहूस दिन मैं कैसे भूल सकती हूँ, जिसने मेरी पूरी जिंदगी में उथल पुथल मचा कर रख दी। मेरी सारी ख्वाहिशों का गला घोंट डॉला। तेईस वर्ष बीत गए, उस घटना को घटित हुए, किंतु ऐसा लगता है, जैसे कल की ही बात है। उसे घटना कहूँ या दुर्घटना, कुछ भी समझ लूँ, किंतु उस वारदात ने मेरी महत्वकांक्षाओं पर ऐसा तुषारापात किया कि मेरे सपनों को पूरा करने का हौसला ही मुझसे छीन लिया।

8 अगस्त 1995 का वह बड़ा ही मनहूस दिन था। ऑफिस की पेमेंट लाने विकासपुरी से पटेल नगर बैंक जाना था। उन दिनों यात्रा भत्ता केवल ₹150/ महीना मिलता था, जबकि महीने में तीन चार सौ रुपए आराम से खर्च हो जाते थे, जो हमें स्वयं ही वहन करने पड़ते थे। मैं बैंक से पेमेंट लेकर बस स्टॉप तक आ गई। हम कभी भी बैंक के बाहर से थ्री-व्हीलर नहीं लेते थे। बस स्टॉप पर आकर जो वाहन पहले आ जाए, उसमें बैठ जाते थे। उस दिन बरसात भी बहुत तेज थी। बस पहले आई और मैं उसमें बैठ गई। जब विकासपुरी डी ब्लॉक आया तो कंडक्टर ने कहा कि बस हस्तसाल की तरफ मुड़ेगी। जिसे उतरना हो उतर जाओ। मुझे जी ब्लॉक जाना था, सो मैं वहाँ उतर गई।

दूसरी तरफ कई ऑटो वाले खड़े थे। उनसे चलने के लिए कहा, किंतु थोड़ी सी दूरी तक जाने के लिए सबने मना कर दिया। मैं एक रिक्शा में बैठकर ऑफिस के लिए रवाना हुई। बारिश हो रही थी। अतः मैंने रिक्शा वाले से कहा कि रिक्शा की

बरसाती खोल ले और पैरों पर मैंने अपना छाता खोलकर फैला लिया। डी ब्लॉक और सी ब्लॉक को पार करती हुई रिक्शा एफ-ब्लॉक ऑक्सफोर्ड स्कूल के सामने से गुजर रही थी कि तभी सामने से बाइक पर सवार तीन लोग गलत साइड से आए। बाइक पूरी रफ्तार पर थी, जिसकी वजह से रिक्शा में इतनी तेज टक्कर लगी कि रिक्शा उलटते-उलटते बचा। मेरे मुँह से निकला:- "अंधा है क्या.."? अभी इतने ही शब्द मुँह से निकले थे, कि बाइक पर सवार सबसे पीछे वाला बदमाश (गुंडॉ स्टाइल में) बाइक से उतरा और एक हाथ से मेरा पर्स छीनने की कोशिश करता रहा और दूसरे हाथ से मेरी कनपटी पर मुक्के मारता रहा।

मुक्के भी ऐसे जैसे लोहे से मार रहा हो। उस वक्त तो मैंने सोचा कि इसने शायद शराब पी रखी है, इसीलिए यह इतना वहशी हो गया है।एक सैकेंड में ही मैंने सारे देवी देवताओं को याद कर लिया। इसी दौरान मेरे पर्स की बेल्ट टूट कर उस गुंडे के हाथों में आ गई और पर्स नीचे गिर पड़ा। वह पर्स उठाकर बाइक पर बैठा और मैं रिक्शा से कूदकर बाइक के पीछे-पीछे भागी। तब मुझे समझ आया कि वह लूटमार करने के इरादे से आया था। मेरे पैर से पहले एक चप्पल निकली। मैं एक ही चप्पल पहने-पहने उसके पीछे दौड़ती चली गई। फिर दूसरी चप्पल भी निकल गई। चश्मा मारपीट में पहले ही गिर गया था। बरसात बहुत तेज थी। ऑक्सफोर्ड स्कूल के पास काफी फल वाले, एक छोले कुलचे वाला, एक स्कूटर मैकेनिक बैठे रहते हैं। एक मेडिकल स्टोर भी है। कोई वहाँ था या नहीं, मुझे कुछ नहीं मालूम। मैं तो बाइक सवारों के पीछे दौड़ते हुए चिल्ला रही थी... नंबर, नंबर, नंबर।

जब बाइक आँखों से ओझल हो गई तो मैं जो रिक्शा सामने खड़ा था, उसमें ही जी ब्लॉक स्कूल कहते हुए लुढ़क गई। मैं चीख- चीख कर रो रही थी। रोते-बिलखते बेहाल हो रही थी। पता नहीं कौन मुझे स्कूल तक छोड़ कर आया। बाद में लोगों से पता लगा कि जब रिक्शा स्कूल के गेट में अंदर घुसा तो एकदम कोलाहल मच गया। उसके बाद क्या हुआ... मुझे कुछ पता नहीं। बाद में लोगों से पता लगा कि मेरे कान के पास से बुरी तरह खून बह रहा था। जब रिक्शा गेट से अंदर आया तो एकदम शोर मच गया कि स्कूल में आतंकवादी घुस आए हैं और राधा गोयल को छुरा मार दिया है। डर के मारे बच्चे भागने शुरू हो गए।

हो सकता है कि रिक्शा वाले से कुछ दास्तान पता लगी होगी तो स्कूल में छुट्टी की घंटी बजवा दी गई। सौ नंबर पर सूचित कर दिया गया और पुलिस स्कूल में आ गई। तब तक मुझे यह नहीं मालूम था कि मैं बेहोश हुई थी, इसलिए जब पुलिस

वाले मुझे अस्पताल ले जाने लगे तो मैंने उनसे कहा कि पहले मौका -ए- वारदात पर चलो। शायद अपराधियों का कुछ पता चल जाए। वो बोले कि वे पहले ही वहाँ जाकर पता कर आए हैं। मुझे बड़ा आश्चर्य हुआ। मैंने कहा कि अभी - अभी दो मिनट पहले मैं यहाँ पहुँची हूँ और पीछे - पीछे आप ऐसे आ गए, मानो स्कूल के गेट के बाहर ही खड़े हों। जहाँ वारदात हुई है, वहाँ कब जाकर पता लगा लिया?खैर!

पुलिस वाले नहीं माने और मुझे हॉस्पिटल ले गए। मुझे नहीं मालूम था कि मुझे चोट लगी है या खून बह रहा है, क्योंकि मेरे दिमाग में सरकारी पैसे लुट जाने का खौफ सवार था। मेरे साथ हमारे D.D.O व दो अध्यापक भी साथ गए। इमरजेंसी में मेरे कई एक्स-रे लिए गए। शाम तक मेरे दाएँ भाग में जबाड़े के पास खून रिस रिसकर आता रहा, जिसे मैं बार-बार साफ कर रही थी। 'उस दिन इतनी बरसात थी कि लगता था बादलों को जितना बरसना है, आज ही बरस लेंगे।'

हॉस्पिटल पहुँचकर मेरे पति को सूचना दी गई। वह भी आ गए और अपने भाईयों को भी फोन किया। सारे भाई हॉस्पिटल के लिए अपने- अपने घरों से निकल पड़े और मेरी सासू माँ को बच्चों के पास छोड़ा। पति के कुछ दोस्त भी आ गए थे। बड़ी मुश्किल से रात को 11:30 बजे यानी कि वारदात के पूरे 12 घंटे बाद FIR दर्ज की गई, वह भी तब, जब सभी ने थाने के बाहर धरना दिया। मुझे हॉस्पिटल में एडमिट कर लिया गया था। तब तक भी मुझे नहीं मालूम था कि मुझे चोट लगी है। लेकिन कनपटी और जबाड़े में इतना दर्द था कि बर्दाश्त से बाहर था। बाद में पता लगा कि मेरी कनपटी में तीन फ्रैक्चर हो गए थे। गाल की हड्डी टूट कर दाँतों के बीच में फ़ँस गई थी और जबाड़ा अपनी जगह से डिस्लोकेट हो गया था। एक्सरे होने के बाद भी फ्रैक्चर के बारे में नहीं बताया गया। जब मुझे इमरजेंसी में एक्स-रे होने और उसकी रिपोर्ट आने के बाद वार्ड में शिफ्ट कर दिया गया तो पूछताछ का सिलसिला शुरु हुआ।

“आप इतने पैसे लेकर अकेली क्यों आ रही थी”।

“हमेशा अकेले ही जाते हैं। कभी-कभी तो रकम इससे भी ज्यादा होती है।"

“आप का इंश्योरेंस कितने रुपए का है”।

“₹10000 का”

“फिर ₹10000 से ज्यादा आप कैसे ला सकते हो”।

“चैक का अमाउंट उससे ज्यादा है तो जितनी रकम का चैक होता है, उतने पैसे निकालने ही पड़ते हैं”।

“आप बस में क्यों आए”?

“जिन दिनों वेतन या मँहगाई भत्ता मिलता है, उन दिनों लूटपाट की घटनाएँ बढ़ जाती हैं, इसलिए हम बैंक के बाहर से थ्री व्हीलर नहीं करते। बस स्टॉप पर आकर जो भी पहले मिल जाए। बस में केवल उस स्थिति में ...जब वह कुछ खाली हो... तो बैठकर आ जाते हैं”।

“क्या तुम गुंडों को पहचान सकती हो”?

“हाँ ! जिसने मुझे मारा था, उसे मैं अच्छी तरह पहचान सकती हूँ”।

“देखो! तुम यह लिखवा दो कि तुम थ्री व्हीलर से आ रही थीं। थ्री व्हीलर पलट गया। तुम बेहोश हो गईं और जब तुम्हें होश आया तो तुम्हारा रुपयों से भरा हुआ बैग गायब था”।

“लेकिन मैं तो थ्री व्हीलर से आई ही नहीं”।

“देखो! हम यह बात तुम्हारे फायदे के लिए कह रहे हैं। यदि तुम ऐसा नहीं कहोगी तो तुम्हारी नौकरी जा सकती है, क्योंकि इतने रुपए लेकर तुम्हें स्कूटर में ही आना चाहिए”।

“मुझे नौकरी की कोई चिंता नहीं है। चिंता है तो इस बात की, कि दिनदहाड़े चलती हुई सड़क पर ऐसा काण्ड हो जाए। यह तो गुंडॉराज हो गया ना”?

“आपकी सरकारी नौकरी है। नौकरी मुश्किल से मिलती है। आप क्यों ऐसा रिस्क ले रही हैं”?

“बात सिर्फ मेरी नौकरी की नहीं है। बात यह है कि दिन-दहाड़े मेन रोड पर गुंडों की इतनी हिम्मत हो गई कि उन्होंने दिनदहाड़े एक महिला को मुक्के मारकर लूटपाट की। जब दिन में ऐसा हो सकता है तो रात को तो सुरक्षा की बिल्कुल भी गारंटी नहीं है। रात को लोग शादी में भी जाते हैं और महिलाएँ आभूषण पहन कर जाती हैं। यदि दिन-दहाड़े ऐसी वारदात हो सकती है तो क्या गारंटी है कि रात को नहीं होगी?”

“आप लोगों की बात छोड़िए। आप अपनी नौकरी बचाने की बात सोचिए”।

“भाड़ में गई नौकरी। यदि मैं अपनी नौकरी की चिंता करके झूठ बोल भी दूँ, या सभी लोग ऐसा ही सोचने लगें और केवल अपनी चिंता करने लगें तो गुंडों के हौसले तो और भी बुलंद होंगे। लड़कियों का सड़क पर निकलना मुश्किल हो जाएगा। मेरी भी दो जवान बेटियाँ हैं। कभी-कभी कॉलेज से आने में शाम को देर भी हो जाती है”... शब्द अभी पूरे भी नहीं हुए थे कि इंस्पेक्टर एकदम बोला- अच्छा! आपकी दो जवान बेटियाँ भी हैं। तब तो आपको बिल्कुल भी यह बात नहीं बोलनी चाहिए कि आप

उनमें से एक गुंडे को पहचान सकती हैं। आपने कितनी फिल्मों में देखा होगा कि ऐसे लोगों के परिवार के साथ क्या-क्या होता है। फिर आपकी तो दो जवान बेटियाँ हैं। आप समझ रही हैं न कि मैं क्या कह रहा हूँ।

उसकी बात सुनकर मेरे दिमाग में एकदम खलबली मच गई। मैंने सोचा कि इंस्पेक्टर बिल्कुल सही कह रहा है। यदि उन गुंडों ने मेरी बेटियों के साथ कुछ ऐसा वैसा कर दिया तो ओ ओ ओ ओ..... और यह सोचकर मैं काँप गई। फिर मैंने कहा कि मैं यहाँ हॉस्पिटल में हूँ। मुझे मेरे बच्चों के लिए सिक्योरिटी चाहिए।

"ठीक है आपके बच्चों को सिक्योरिटी मिल जाएगी। किंतु कब तक ? आपने देखा नहीं कि जो गुंडों को पहचान जाता है, उसको अस्पताल में ही मरवा दिया जाता है"। मैं इतना डर गई थी, कि उसकी इस बात से भी सहमत हो गई कि मैं उस गुंडे को नहीं पहचानती जिसने मेरी कनपटी पर मुक्के मारे थे। बाकी दो को तो बिल्कुल ही नहीं पहचानती, क्योंकि मैंने उनकी केवल पीठ देखी थी।

इंस्पेक्टर- "एक बाइक पर तीन लोग कैसे आ सकते हैं"?

"मगर मैंने तीन को ही देखा था। रिक्शा के आगे एकदम झटके से आए थे"।

"यह कैसे पॉसिबल है कि एक बाइक पर तीन लोग थे, क्योंकि कानूनन भी यह जुर्म है"?

"ठीक है फिर दो ही होंगे। मुझे तीन नजर आए होंगे।"

"ठीक है। अब आप अपनी कंप्लेंट लिखवाऐं"।

फिर मैंने सारी बात ज्यों की त्यों दोहरा दी। उन्होनें फिर मुझे समझाने की कोशिश की कि आप ये लिखवाओ कि आप थ्री व्हीलर से आ रही थीं। ऑक्सफोर्ड के पास आपका थ्री व्हीलर पलट गया। आप बेहोश हो गईं। जब आपको होश आया तो आपका पर्स गायब था। मैंने कहा कि ठीक है जैसे आप कह रहे हैं वैसे ही लिखवा देती हूँ। लेकिन उन गुंडों का क्या? वे क्या ऐसे ही आजाद घूमते रहेंगे?

"हम गुंडों को पकड़ लेंगे। आप निश्चिंत रहिए"

"और पैसे"?

"वो भी वापस मिल जायेंगे"। मैंने कहा कि जब गुंडे भी पकड़े जायेंगे और पैसे भी मिल जायेंगे, फिर कंप्लेंट लिखने में क्या हर्ज है ? अब तो मैं यह भी मान गई हूँ कि मैं उस गुंडे को नहीं पहचान सकती, जिसने मारा था"।

"आप नहीं समझ रही हैं कि आपकी नौकरी चली जाएगी"।

नौकरी की मुझे रत्ती भर चिंता नहीं है। मेरा दिमाग इस बात को मानने को तैयार नहीं है कि जब गुंडे भी पकड़े जायेंगे, पैसा भी मिल जायेगा, फिर सच्चाई लिखने में क्या बुराई या दिक्कत है? पुलिस अपनी बात पर अड़ी रही और मेरे दिमाग में यह उलझन चलती रही कि उन्हें सच्चाई लिखने में क्या दिक्कत है? घंटे चार-पांच घंटे यही सिलसिला दोहराया जाता रहा। पति किसी काम से वार्ड से बाहर निकले तो पुलिस वाली मुझे नीचे ले आए और थाने ले जाने के लिए अपनी जीप में बैठा लिया। किसी ने फौरन पति को बताया। वह भागते हुए नीचे आए। मुझे कहा जीप से नीचे उतरो और फिर पुलिस वालों से पूछा कि आप इन्हें कहाँ लेकर जा रहे हैं?
थाने लेकर जा रहे हैं।
थाने में किसलिए?
क्योंकि रिपोर्ट लिखनी है।

पाँच घंटे में पति भी इस पूछताछ से बहुत झींक चुके थे। बोले कि आप जानते हो न कि मरीज दाखिल है। आप दाखिल मरीज को किस तरह से लेकर जा सकते हैं? आप एडमिटेड मरीज को ले जाना चाहते हो तो ले जाओ। सही सलामत वापस लाना आपकी जिम्मेदारी है क्योंकि झूठी रिपोर्ट लिखवा दें तो आप यहीं लिख लोगे। सच्ची रिपोर्ट लिखनी है... तो आप थाने लेकर जाओगे।

रास्ते में यदि कुछ हो जाए तो उसमें हम क्या कर सकते हैं?

रास्ते में कुछ भी हो जाए, आपकी ही जिम्मेदारी है, क्योंकि आप एडमिटेड मरीज को लेकर जा रहे हो तो सही सलामत लाना भी आपकी जिम्मेदारी है।

12/08/1995 की रक्षाबंधन थी अतः मेरे पति डॉक्टर से आग्रह करके 11/08 को मुझे छुट्टी दिलवाकर घर ले आए थे, क्योंकि उधर मुझे घर की चिंता... और कनपटी और जबाड़े में इतना दर्द था कि बर्दाश्त से बाहर था। मैं एलोपैथिक दवाई बहुत इमरजेंसी में ही खाती हूँ। होम्योपैथी या आयुर्वेदिक इलाज कराना ही पसंद करती हूँ। 11 अगस्त की शाम को एक पुलिस वाला एक स्केच बुक लाया जिसमें अपराधियों के स्केच होते हैं।

मैंने वे सब देखीं। 25-30 फोटो देखने के बाद एक स्केच मुझे कुछ जाना पहचाना लगा और मैं उसे ध्यान से देखने लगी। यह देखकर पुलिस वाले ने कहा कि मैडम! अब तो मेरी ड्यूटी खत्म होने वाली है। मैं फिर आ जाऊँगा। मैंने कहा कि यह किताब छोड़ जाइए। मैं लगातार नहीं देख पा रही हूँ। आराम- आराम से थोड़ा-थोड़ा करके देख लूँगी। आप कल यह किताब ले जाना।

उसने कहा कि कल तो रक्षाबंधन है। त्यौहार के दिन पुलिस वालों का आना अच्छा नहीं लगता। "ऐसी कोई बात नहीं है। मैंने कोई क्राइम तो किया नहीं है कि त्यौहार के दिन मेरे घर आओगे तो पड़ोसियों को कैसा लगेगा? अब तक तो यह सूचना एक दूसरे से सभी पड़ौसियों को पता लग चुकी होगी कि राधा गोयल को दिनदहाड़े गुंडों ने पीट- पीटकर कैश से भरा बैग छीन लिया और फरार हो गये।

इसलिए कोई कुछ नहीं सोचेगा। आप कल आकर यह किताब ले जाना। उसने किताब मेरे हाथ से ली और यह कह कर चला गया कि वह कल किताब दोबारा ले आएगा, जिसे वह कभी लेकर नहीं आया।

रक्षाबंधन वाले दिन मेरे सभी भाईयों व बहनों, मेरी सासू माँ के सभी भाई, मेरे चार देवरों का व ननदों का पूरा परिवार था। उनसे ही यह पता लगा कि उन लोगों ने अखबार में यह सूचना पढ़ी। पहले फौरी तौर पर केवल हैडिंग देखा। जब विकासपुरी और राधा गोयल भी लिखा देखा तो पूरी खबर पढ़ी और घर में फोन करके पूछा कि सब कैसे हैं। सासू माँ ने ही सबको बताया कि राधा के सिर में बहुत चोटें लगी हैं और वो अस्पताल में दाखिल है। लोगों ने अलग-अलग छह अखबारों में यह खबर पढ़ी।

मेरी कनपटी और जबाड़े में इतना जबरदस्त दर्द था कि बर्दाश्त से बाहर था। हर तीसरे दिन हॉस्पिटल दिखाने जाती थी। हर बार पहले से तीव्र दर्द निवारक गोलियाँ खाने के लिये व मरहम लगाने के लिए दे देते थे। उन दवाओं से पेट व सीने में जबर्दस्त दर्द होता था। पेट का अल्ट्रासाउंड हुआ तो पता लगा कि ओवरी में सिस्ट है। ई.सी.जी में आया कि हार्ट इनलार्ज है।

कभी दूध में बिस्किट घोलकर, कभी सूजी की खीर बनाकर, तो कभी दूध में ब्रेड उबालकर खाती थी, क्योंकि दवा खानी जरूरी थी। किन्तु दवाएँ खाते-खाते और लगाते-लगाते भी दर्द कम होने की बजाय बढ़ता ही जा रहा था। रोटी का एक निवाला भी खाती थी तो ऐसा लगता था जैसे दाढ़ में कोई कंकर फँसा हुआ है, जिसकी वजह से खाया ही नहीं जाता था। बहुत परेशान होकर मैंने दाँतों के डॉक्टर को दिखाया, लेकिन उसे मैंने एम.एल.सी केस के बारे में कुछ नहीं बताया।

जब उन्होंने दाँत का एक्सरे किया तो उसमें हड्डी का झड़ा हुआ कोना फँसा हुआ था। वह हड्डी का कोना कहाँ से झड़ा है, यह जानने के लिए उन्होंने दाएँ तरफ की खोपड़ी व गाल का एक्सरे कराया। उसमें पता लगा कि गाल की हड्डी का एक कोना टूटकर दाढ़ में फँस गया था और दाईं कनपटी के पास खोपड़ी में तीन फ्रैक्चर थे। सारा जबाड़ा अपनी जगह से डिस्लोकेट हो गया था। खोपड़ी में प्लास्टर तो हो

नहीं सकता था। उन्होंने मेरे ऊपर नीचे के जबाड़े कसकर तारों से बाँध दिए जिससे मैं न तो बोल सकूँ और न ही मुँह चला सकूँ।

खाने के नाम पर केवल पेय पदार्थ ही ले सकती थी। उन दिनों जितना गन्दा खाना मैंने पिया, उसे बहुत कम लोग ही खा सकते हैं। कई महीनों तक जूस कोई अमीर आदमी के लिए ही संभव है। एक मध्यम वर्गीय परिवार के लिए नहीं... जिसके सिर पर बच्चों की जिम्मेदारी भी हो। मिक्सी में रोटी पानी और नमक डॉलकर, उसे पीसकर, छलनी में छानकर, स्ट्रा से पीती थी। सब्जियों और दालों का भी पानी पीती थी। डबल रोटी तक दूध और चीनी मिलाकर, मिक्सी में पीसकर, छलनी में छानकर पीती थी। छह महीने तक जो कुछ भी पिया केवल पेय पदार्थ की शक्ल में। लिम्का, फ्रूटी से मुझे सख्त परहेज़ है। दलिए का भी पानी ही पी सकती थी। छह महीने बाद जबाड़े खोल दिए गए। अब मैं कुछ-कुछ हल्का फुल्का खा लेती थी लेकिन दर्द खत्म नहीं होता था।

तब एक और नई बीमारी शुरू हो गई थी कि किसी की तेज आवाज से बेहोशी जैसी आने लगती थी। बेड पर कोई फाइल भी थोड़ा जोर से रखता था तो कान में बजती थी। (आज इतने वर्षों बाद भी यही हालत है।) ऑफिस में लोहे की मेज कुर्सियाँ होती हैं। उनको सरकाने पर किर्र-किर्र की आवाज होती है। उससे बुखार हो जाता था। बुखार भी ऐसा कि हाथ पैर बर्फ जैसे ठंडे।

ऐसे ठंडे कि लगे कि थर्मामीटर लगाएँगे तो उसमें बुखार 95 डिग्री से ऊपर होगा, तभी आएगा लेकिन नब्ज़ इतनी धीमी चलती थी और दिल में भी इतनी घबराहट होती थी कि यही यकीन होता था, कि बुखार 94 डिग्री से ज्यादा नहीं होगा। इसके लिए भी कई बार ब्लड प्रेशर चेक कराया, किंतु वह हर बार सामान्य रहता था। फिर एक दिन ऐसी ही स्थिति होने पर मैंने यह सोचकर थर्मामीटर लगाया कि हो सकता है 95 डिग्री तापमान हो या थर्मामीटर का पारा ऊपर चढ़ेगा ही नहीं, किंतु जब बुखार देखा तो 104 डिग्री था। ऐसा एक बार नहीं अनेकों बार हुआ।

विकासपुरी में जिस सड़क के पास मेरे साथ यह वारदात हुई थी, उस तरफ तो जाने के नाम से ही मेरे रोंगटे खड़े हो जाते थे। दो-तीन साल तक अकेली तो मैं उस रास्ते से कभी गई ही नहीं। यदि कोई गाड़ी में भी मुझे उस रास्ते से ले जाता था, तो बुरी तरह दहशत हो जाती थी, कि कहीं वही गुंडॉ (जिसे मैंने कहा था कि मैं पहचान सकती हूँ,) हमें मारने की कोशिश न करे। वैसे मेरे मन में उस गुंडे के प्रति इतना आक्रोश था, कि मैं बता नहीं सकती। मेरे घर में स्टील के छोटे वाले फोक (काँटे) थे।

एक फोक मैंने अखबार में लपेटकर अपने पर्स की बाहरवाली जेब में रख लिया। सोचती थी कि जिस दिन भी वह गुंडॉ मुझे नजर आ गया, इस काँटे से उसकी आँखें फोड़ दूँगी। कुछ दिन बाद सोचा कि जितनी देर में पर्स में से अखबार में लपेटा हुआ काँटा निकालूँगी, उतनी देर में तो वह मरदूद रफूचक्कर हो जाएगा।

फिर उस काँटे को अखबार में लपेटकर हाथ में लेकर जाना शुरू किया। फिर सोचा कि जितनी देर में अखबार की तह खोलूँगी, उतनी देर में तो वह जल्लाद भाग जाएगा। फिर बिना अखबार में लपेटे हाथ में लेकर ही जाना शुरू किया। एक दिन रास्ते में कोई सखी मिल गई और उसने मुझसे हैलो करने के लिए हाथ मिलाया। मैंने हाथ मिलाने के लिए हाथ खोला तो झटाक से वो काँटा नीचे गिरा। उसने पूछा कि मैं वह काँटा हाथ में लेकर क्यों जा रही थी। मैंने उसे बताया कि उस कमीने की आँख फोड़ने के लिए। जिस दिन भी मुझे वह मनहूस दिखाई देगा, उसकी इस काँटे से आँखें फोड़ दूँगी। उसने समझाया कि ज्यादा बहादुर मत बन तू उसका कुछ नहीं बिगाड़ पाएगी। अपनी तबीयत और ज्यादा खराब कर लेगी और सड़क पर ऐसे काँटा लेकर चलेगी तो लोग तुझे पागल समझ लेंगे। जो बीत गया उसको भूल जा। उसके बाद मैंने एक बटन वाला चाकू रखना शुरू किया। कुछ महीने बीतने के बाद एक छोटा सा सूआँ रखने लगी।

यहाँ मैं एक बात और बताना चाहूँगी। चतुर्थ श्रेणी कर्मचारियों से मैंने कहा कि मैं अपने वेतन से उनकी पेमेंट कर दूँगी। सभी ने मना कर दिया। सभी टीचर्स व सभी कर्मचारियों ने एक ही बात कही कि 'मैडम आप की जान बच गई। हमें इस बात की बहुत खुशी है। हमारे पैसों के बारे में आप सोचना छोड़ दो। हम भगवान से बस यही दुआ करेंगे कि आप जल्दी से ठीक हो जाओ। 'मेरे साथ घटी उस दुर्घटना से सभी इतने भयभीत हो गए थे, कि प्रत्येक कैशियर ने नकद पैसे लाने से मना कर दिया।

हमारे ही स्कूल में जिस लिपिक को कैश का चार्ज देने के लिए कहा गया, उसने अपना ट्रांसफर करा लिया। एक अन्य लिपिक की पोस्टिंग हुई। उससे कैश का काम संभालने के लिए कहा गया, लेकिन उसने भी स्पष्ट मना कर दिया। मेरी मनोस्थिति ऐसी थी ही नहीं कि मैं कैश ला सकूँ। उन्हीं दिनों फिर ऑर्डर निकला कि चतुर्थ श्रेणी कर्मचारियों के अलावा सभी का वेतन व जब-जब मँहगाई भत्ता बढ़ेगा अथवा कोई एरियर इत्यादि होगा, वह सब उनके अकाउंट में जमा होगा, इसलिए सभी लोग बैंक में अपना खाता खोलें। लेखा कार्यालय से सभी चैक 'ए' सीरीज़ के मँगाये जाने लगे। बिल पर रिमार्क्स में लिखते थे कि 'चैक केवल ए सीरीज़ का इश्यू

किया जाए। हमारा विद्यालय जो पहले सहशिक्षा विद्यालय था, वह अप्रैल 1997 में अलग- अलग हो गया।

सुबह की पाली लड़कियों की "सर्वोदय उच्चतर माध्यमिक कन्या विद्यालय" के नाम से व द्वितीय पाली "सर्वोदय उच्चतर माध्यमिक बाल विद्यालय" के नाम से बनी। सभी पुरुष शिक्षकों की पोस्टिंग बाल विद्यालय में कर दी गई। अब बारी आई कि लिपिक वर्ग से किसे भेजा जाए? सभी शिक्षक इस बात से एकमत थे, कि हमारे यहाँ केवल राधा गोयल की पोस्टिंग कर दो। मैंने उनसे कहा भी कि यहाँ तो कैश वगैरह जमा कराना या लाना डी.डी.ओ कर लेते हैं। वहाँ कौन करेगा? मैं ऑफिस में बैठकर जितना मर्जी काम कर सकती हूँ, लेकिन मैं कैश लाने... ले जाने का काम बिल्कुल नहीं कर सकती। सभी बोले कि हम यह लिख कर देने के लिए तैयार हैं कि आपको कभी भी कैश लाने या ले जाने के लिए नहीं कहेंगे। उन्होंने वास्तव में अपना वचन निभाया। मैंने अकेले अवर लिपिक, प्रवर लिपिक, मुख्य लिपिक, सुपरिंटेंडेंट का काम पूरी निष्ठा और जिम्मेदारी से निभाया। सन् 1998 के आखिरी महीने में स्कूल में मुख्य लिपिक व सुपरिंटेंडेंट की पोस्टिंग हुई थी।

उस दुर्घटना के बाद कई नई-नई बीमारियों का सामना करना पड़ा। एंटीबायोटिक व दर्द निवारक दवाइयाँ लेने से पेट में असहनीय दर्द होता था। उसके लिए अल्ट्रासाउंड हुआ तो पता लगा कि "ओवरी में सिस्ट है"। सीने में बहुत दर्द होता था। उसके लिए ई.सी.जी हुई तो पता लगा कि "हार्ट एनलार्ज है"। मुझे एक और भी अन्य अजीब सी बीमारी हो गई थी। बोलते-बोलते आवाज़ गुम हो जाती थी। दो-तीन मिनट तक कुछ नहीं बोल पाती थी।

मैं सोचती थी कि मैं जरा ज्यादा बोलती हूँ, इस वजह से ऐसा होता है। तीन दिनों तक जबरदस्त कमजोरी लगती थी। होम्योपैथिक दवा ले आती थी। तीन दिन बाद कमजोरी दूर हो जाती थी। यह तो बाद में पता लगा कि आवाज़ ज्यादा बोलने की वजह से गुम नहीं होती थी, अपितु "वे फिट थे", जिसकी वजह से "हर फिट के बाद" ब्रेन के कुछ टिश्यू डैड हो जाते थे। तीन दिन कमजोरी रहती थी। तीन दिन बाद सब सामान्य हो जाता था। मुझे नहीं मालूम था कि "मेरी आवाज जाने का कारण फिट है"।

जब बोलते-बोलते आवाज़ गुम हो जाती थी, तो अपने सहकर्मियों को हाथ के इशारे से बताती थी, कि 'जरा रुको'। उनको भी इस बात की आदत सी हो गई थी, इसलिए वह मेरे इशारे को समझ जाते थे। यह आवाज़ गुम होना किस बीमारी के

लक्षण हैं, यह तब पता लगा जब मार्च 1999 में मेरी दूसरी बेटी का रिश्ता पक्का हुआ था। एक बेटी की शादी 21 जनवरी 1995 में कर चुकी थी। तब तक मैंने कोई सहायिका नहीं लगाई हुई थी। यहाँ तक कि बेटी की शादी के लिए जो भी कपड़े बनाने थे, (यहाँ तक कि अस्तर वाले ब्लाउज भी) घर में ही बनाये थे। सूट, पेटीकोट, ब्लाउज़, साड़ी में फॉल लगाना... सब कुछ खुद किया था और वह भी बिना किसी सहायिका के...सेमी वाशिंग मशीन भी तब ली, जब यह हादसा हो गया था और उसके बाद ही सहायिका लगाने की भी आवश्यकता पड़ी। मेरी बेटी की 18 अप्रैल की सगाई तथा मई माह में शादी की तिथि तय की गई।

मैं पूरे जोर-शोर से शादी की तैयारियों में लग गई। 30 मार्च को मैं पलंग पर बैठ कर यह देख रही थी, सगाई वाले दिन बेटी के लिये कौन सी साड़ी अच्छी रहेगी। तीन साड़ियाँ देखने के बाद तह करके रख चुकी थी। चौथी साड़ी को हाथों में फैलाकर जैसे ही देखने लगी तो एकदम खोपड़ी में हजार वाट के बल्ब जैसी चौंध हुई और एकदम भक्क से बुझ भी गई। साड़ी मेरे हाथ से छूट गई और मैं पलंग पर गिर पड़ी। मैं कितनी देर बेहोश रही, मुझे नहीं मालूम, क्योंकि मैं घर पर अकेली थी। जब होश आया तो मैंने कसकर अपनी आँखें बंद करके उस साड़ी की तह लगाई। आँखें बंद किये-किये ही हाथ मारकर लिफाफा ढूँढा और उसमें साड़ी ठूँसी। मुझे लगा कि शायद इस साड़ी की चौंध के कारण मेरी आँखें चौंधिया गई होंगी।

वह ₹4000 की साड़ी मैंने बेटे की शादी में किन्नरों को दी क्योंकि तब तक भी मुझे नहीं मालूम था, कि वह फिट पड़ने के कारण हुआ था। पलंग पर रखा हुआ सारा सामान ठिकाने पर रखने के बाद मैं स्कूल (ऑफिस) के लिए तैयार होने लगी। हालाँकि कमजोरी बहुत महसूस हो रही थी, लेकिन उसकी आदत पड़ चुकी थी और मार्च एंडिंग भी था। अभी तैयार होकर निकल ही रही थी, कि मेरे बड़े देवर का फोन आ गया। वो रोजाना हाल-चाल जानने के लिए फोन करता था।

उससे बात करते-करते फिर मेरी आवाज़ गुम हो गई। उस समय हमारे यहाँ MTNL के दो फोन थे। जिस फोन पर मैं सुन रही थी, वह मेरे हाथ से छूट गया था। जैसा मेरे देवर ने बताया कि वह दूसरे फोन पर कॉल करता रहा। एक फोन बज रहा था। दूसरा जो मेरे हाथ से छूट गया था... वह इंगेज था। उसने सोचा कि शायद घर में लूटपाट के इरादे से गुंडे घुस आए हैं। शादी का घर है। उसने मेरी देवरानी को फोन करते रहने के लिए कहा और अपने बेटे को फौरन विकासपुरी पहुँचने के लिए कहा। खुद भी पार्लियामेंट हाऊस से विकासपुरी के लिए रवाना हो गया।

जब मुझे होश आया तो फोन का रिसीवर फोन पर रखकर मैं ऑफिस चली गई। बाद में देवर और उसका बेटा विकासपुरी पहुँचे तो नीचे किरायेदार से पता लगा कि वह तो ऑफिस गई हुई हैं। (तब हमने भूतल पर किरायेदार रखा हुआ था।) मेरा ऑफिस घर से मात्र 5 मिनट की दूरी पर था। पहले देवर पहुँचा। आते ही बोला- "तुम ऑफिस क्यों आई हो?"

"यह कैसा प्रश्न है? ऑफिस में तो आज जरूर आना था। मार्च एंड है। "मैंने कहा!

इतनी ही देर में देवर का बेटा भी आ गया। उसने भी वही प्रश्न दोहराया। अब तो मेरे काटो तो खून नहीं। ऊपर की साँस ऊपर और नीचे की साँस नीचे। किसी अनहोनी की आशंका से मैं ऊपर से नीचे तक काँप गई। मैंने कहा -"जल्दी बताओ क्या हुआ है? जल्दी बताओ। मेरा बिल्कुल हार्ट फेल होने वाला है। जल्दी बोलो। जल्दी बोलो। क्या हुआ है?" तब वह बोले कि "कुछ नहीं! माया आई हुई है। (मेरी देवरानी) मैंने राहत भरी लंबी सी सांस छोड़ी और डाँटा कि पहले ही यह बात आराम से नहीं बता सकते थे। अभी मेरी जान निकल जाती।

अच्छा ठहरो! जरा मंजू को थोड़ा सा काम समझा दूँ, फिर चलते हैं। मैं मुख्य लिपिक को काम समझा ही रही थी, कि फिर आवाज़ गुम हो गई। देवर बोला, यही हुआ था, जब मैंने फोन किया था। मैंने कहा कि मैंने हाथ से इशारा तो किया था, कि ठहरो! बाद में मुझे खुद ही हँसी भी आई थी, कि फोन पर क्या मेरा हाथ का इशारा समझ आ रहा होगा और आवाज़ तो मेरी रोज ही लगभग चली जाती है।

इसमें ऐसा विशेष क्या है? खैर! वो दोनों मुझे घर ले आए। मुझे बिस्तर से उठने ही नहीं दिया। न चाय बनाने दी और न ही पानी देने दिया। खुद पानी लेकर पिया मुझे पिलाया और चाय भी खुद ही बनाई। पाँच बजे के आसपास मैंने बार-बार कहा कि तुम्हारे भाई आते ही खाना खाते हैं। मैं खाना तो बना लूँ। लेकिन मुझे बिस्तर से उठने ही नहीं दिया। शाम को जब पति घर आए तो मैं उठने लगी। मुझे तब भी नहीं उठने दिया। इन्हें ड्रॉइंगरूम में ले आए और बताया होगा कि किस प्रकार आधा घंटा एक फोन इंगेज आता रहा और एक पर बेल जाती रही और किस प्रकार ऑफिस में भी मेरी आवाज गुम हुई थी।

इन्होंने अगले दिन ही साउथ एक्सटेंशन में सहगल नर्सिंग होम में मेरा M.R.I कराया। डॉक्टर ने ₹50000 के टेस्ट लिख दिए। लिखित रिपोर्ट बाद में मिलनी थी लेकिन जुबानी बता दिया गया कि लेफ्ट टैम्पोरल लोब में सिस्ट है और ऑपरेशन करना पड़ेगा। उसी की वजह से वह ₹50000 के टैस्ट लिखे थे और यह भी कहा!

कि कल ऑपरेशन के लिए एडवांस एक लाख ₹ जमा करवा दो। जिस डॉक्टर को दिखाने की फीस हमने दी थी... पता लगा उसके जूनियर ने हमें देखा था। जब बात ब्रेन सर्जरी की हो तो जूनियर डॉक्टर की राय के अनुसार काम नहीं किया जा सकता है न।

हमने कहा कि हमने फीस डॉक्टर सहगल के लिए दी है और हम एक बार डॉक्टर सहगल से ही कंसल्ट करना चाहते हैं। हमें डॉक्टर सहगल के पास भेज दिया गया। यह बात एम.आर.आई की रिपोर्ट मिलने के बाद की है। डॉक्टर सहगल ने भी यही कहा कि इमिजियेट ऑपरेशन कराना पड़ेगा। पति ने कहा कि...

"डॉक्टर साहब एक महीने बाद मेरी बेटी की शादी है। यदि तब तक दवाओं से कंट्रोल हो जाता है तो ठीक है। ऑपरेशन शादी के बाद करा लेंगे। और यदि आप समझते हैं कि ऑपरेशन फौरन करना पड़ेगा तो लड़की की शादी पोस्टपोन कर देते हैं। "लेकिन मेरी जिद थी कि मैं बेटी की शादी से पहले ऑपरेशन नहीं कराऊँगी। यह बात हमारी डॉक्टर के कमरे में जाने से पहले ही हो गई थी। मुझे यह भी लग रहा था कि एक प्राइवेट डॉक्टर के कहने मात्र से मैं ऑपरेशन क्यों कराऊँ? सरकारी अस्पताल के डॉक्टर को कोई लालच नहीं होता। वहाँ दिखाने के बाद ही कोई निर्णय करूँगी।

उसके बाद जी.बी पंत अस्पताल में दिखाया। वहाँ के डॉक्टर्स का भी यही कहना था कि ऑपरेशन करना पड़ेगा। जब हमने यह बताया कि एक माह पश्चात् बेटी का विवाह है। क्या ऑपरेशन उसके बाद नहीं कराया जा सकता? कहा गया कि दवाओं से कंट्रोल करने की कोशिश करते हैं और मुझे दाखिल कर लिया। वहाँ मैं सोलह दिन दाखिल रही। 18 अप्रैल को बेटी की सगाई थी पति ने पंत हॉस्पिटल के पास ही 'दुल्हन बैंकट हॉल' बुक कर दिया था। नजदीकी रिश्तेदारों को जुबानी निमंत्रण दिया था। मुझे बड़ी चिंता थी कि काम कैसे निपटेगा। बेटी के श्वसुर भी तीन बार अस्पताल में मिलने आए। यही तसल्ली देते थे कि बिटिया हमारी है। आप टेंशन मत लो, पर बेटी की माँ को तसल्ली कहाँ हो सकती है। 16 तारीख को मैंने डॉक्टर से बार-बार आग्रह किया कि मुझे छुट्टी चाहिए, क्योंकि मेरी बेटी की सगाई है।
"तुम्हारे पति ने सामने ही तो बैंकट हॉल बुक किया है। यहीं खिड़की से नजर आता है। आप यहीं से तैयार होकर जा सकती हैं।" डॉक्टर ने कहा!

मैंने कहा कि "डॉक्टर साहब, मेरी बेटी यदि मेरे साथ घर से नहीं आएगी, तो उसका मॉरल कितना डॉउन होगा? घर से रोते-रोते आएगी तो कैसी लगेगी? मुझे

आज हर हाल में छुट्टी चाहिए। एक बेटी को शौक होता है कि अपनी जिंदगी के ऐसे अनमोल मौके पर उसकी माँ उसके साथ हो। वह माँ से पूछ सके कि मैं कैसी लग रही हूँ? मेरी बिंदी अच्छी लग रही है, लिपस्टिक ठीक लगी है, साड़ी ठीक बँधी है? ऐसे मौके पर कितने अरमान होते हैं, एक बेटी के और माँ के। मुझे आज घर जरूर जाना है। "सुबह से शोर मचाते - मचाते तब कहीं जाकर रात को नौ बजे तक डिस्चार्ज समरी बनी और हम रात को 11:30 बजे तक अपने घर पहुँचे।

18 तारीख की सगाई थी। शुक्र है कि ठीक-ठाक संपन्न हो गई। जो दवाइयाँ डॉक्टर ने दी थीं...उनका क्या साइड इफ़ेक्ट हो रहा है... और लीवर पर उनका क्या बुरा असर हो रहा है... उसके लिए हर तीसरे दिन कई तरह के टैस्ट होते थे। बार-बार पीलिया हो जाता था। इस वजह से शादी की तारीख भी निश्चित नहीं कर पा रहे थे। बाद में इन दवाओं से इतना जबर्दस्त पीलिया हुआ कि वह तीन महीने में काबू में आया। ढाई महीने तक गोविंद बल्लभ पंत हॉस्पिटल का इलाज चलता रहा। पीलिया में रत्ती भर भी फर्क नहीं पड़ा। हालत यह हो गई थी, कि घर के काम भी बड़ी मुश्किल से कर पाती थी।

किसी ने कहा कि मोती नगर में कोई देसी दवाई देता है। उसका इलाज किया, किंतु कोई असर नहीं हुआ। किसी ने कहा कि नारायणा में एक वैध जी हैं। वह सिर्फ पीलिया की दवाई देते हैं। जबर्दस्त भीड़ लगी रहती है। वहाँ का इलाज शुरू किया किंतु कोई फर्क नहीं पड़ा। बेटी की शादी की तारीख मेरी बीमारी की वजह से चार बार पोस्टपोन हो चुकी थी। अब पुनः 23 नवंबर की तारीख तय हुई थी। दिमाग में बहुत टेंशन थी। शादी की तैयारियाँ कैसे करें? बेटा ऑफिस जाते समय मेरे ब्लड टैस्ट कराने के बाद मुझे ब्लाउज पीस वाले की दुकान पर बैठा जाता था।

उससे कहकर जाता था कि मम्मी की तबीयत ठीक नहीं है। खड़ी नहीं रह सकतीं। उन्हें स्टूल पर बिठा दो और बाद में रिक्शा में बैठा देना। पहले हर तीन दिन बाद टैस्ट होते थे फिर कुछ महीने बाद हर सप्ताह टैस्ट होते थे, तभी कुछ साड़ियाँ बैग में रख लेती थी, जिससे उनके मैचिंग ब्लाउज़ पीस ला सकूँ और दर्जी को सिलाई के लिए दे सकूँ। सिलने में भी समय लगता है। क्योंकि तब मुझमें हिम्मत नहीं थी, कि मैं खुद से सिलाई कर सकूँ। रिश्तेदार व पड़ोसियों ने बहुत मदद की।

दुल्हन के लिए ढेरों तैयारियाँ करनी होती हैं। उसकी जरूरत का सभी सामान मेरी बहन, देवरानी और मेरी बेटी की सखियाँ दिलवाकर लाईं। मैं तो केवल साड़ियाँ ही लाई थी, जो शादी के हिसाब से काफी नहीं थीं। तबीयत सँभलने का नाम ही नहीं

ले रही थी। अंत में सभी ने यह निर्णय किया कि वे लोग सब कुछ सँभाल लेंगे। छह महीने से बार-बार शादी की डेट बढ़ाई जा रही है।

अब जो मुहूर्त निकला है, उसमें हर हाल में शादी करनी है। शादी दूसरे शहर में जाकर करनी थी। पीलिया इतना जबर्दस्त था और अत्यधिक कमजोरी थी, किंतु बेटी की शादी का काम उससे भी अधिक जरूरी था। छह महीने से अन्न खाना बंद था। थोड़ा सा काम करने से थकान हो जाती थी। सभी ने काम की जिम्मेदारी अपने कंधों पर ले ली थी। बेटी की ससुराल वालों ने सभी प्रबंध की जिम्मेदारी ले ली थी। शादी ठीक प्रकार से संपन्न हो गई। वापस आते समय मैंने यह कहते हुए खाना खाया कि... "आज तो मैं खाना खाऊँगी। बेटी की शादी हो गई है। अब मर भी जाऊँ तो कोई चिंता नहीं है। लड़के की शादी तो हो ही जाएगी।

मेरा जॉण्डिस कैसे ठीक हुआ?

जारी है

मुझे जॉन्डिस हुआ है यह बात कैसे पता लगी।

तीन-तीन दिन तक खाना खाने का बिल्कुल मन नहीं करता था। बहुत कमजोरी महसूस होती थी और उल्टी की फीलिंग होती रहती थी। घर के सारे ही काम करती थी और ऑफिस भी जाती थी, लेकिन सारे काम बड़े बोझिल तरीके से करती थी। हँसने का तो बिल्कुल ही मन नहीं करता था। होम्योपैथिक डॉक्टर को बताया कि डॉक्टर साहब मुझे कुछ जॉन्डिस के सिम्टम्स लग रहे हैं क्योंकि 3-3 दिन तक भूख नहीं लगती। मेरी आँखों में कोई पीलापन नहीं था।

हाथ के नाखून भी पीले नहीं थे, इसलिए डॉ यह बात मानने के लिए तैयार नहीं था, कि मुझे जॉन्डिस है। वैसे भी मेरी शुरू से ही आदत रही है कि जब तबीयत खराब हो तो अपने आपको घर के काम में इतना व्यस्त कर लो कि तबीयत की तरफ ध्यान ही न जाए। यह बात अलग है कि बीच-बीच में दो-दो मिनट के लिए विश्राम कर लेती थी। एक दिन खुद ही एल.एफ.टी करा कर आई। पति को फोन किया कि मैं सुबह LFT करा कर आई हूँ। आते हुए वापसी में मेरी रिपोर्ट लेते हुए आना। शाम को रिपोर्ट लेकर आए। कॉलबेल बजाई। मैं दरवाजा खोलने के लिए नीचे आई। बोले "चलो मेरे साथ।"

"कहाँ? मैंने तो गैस पर तवा रखा हुआ है।"

"गैस बंद कर दो। डॉक्टर के पास चलना है।"

"लेकिन क्या हुआ?'

"बस चलो"।

ऊपर झाकर मैंने फटाफट गैस बंद की और डॉक्टर के पास दिखाने गए। उसी डॉक्टर के पास दिखाने गए जिन्होंने मुझे कहा था कि जॉन्डिस नहीं है, क्योंकि मुझे उन पर ज्यादा विश्वास था। होम्योपैथिक डॉक्टर हैं। बहुत अनुभवी हैं। जब रिपोर्ट दिखाई तो देखकर हैरान हो गए, क्योंकि मेरा जॉन्डिस जो होना चाहिए था।
ज्यादा से ज्यादा 0.30
वह था:--
एस.जी.पी.टी 2250
एस.जी.ओ.टी 2200
उसके बाद जहाँ-जहाँ इलाज कराया वह सब मैं पहले ही लिख चुकी हूँ।
बिटिया की शादी थी। उसके लिए सबने किस तरह से तैयारियाँ करने में सहयोग दिया, वह भी बता चुकी हूँ।
जॉन्डिस ठीक किस तरह हुआ??? यह बताना अभी बाकी है।

हर माँ की इच्छा होती है कि वह बेटी के आभूषण बेटी को साथ लेकर उसकी पसंद से लेकर आए। मुझे लगता है कि ये हर माँ के अरमान होते हैं। मैं बेटी के आभूषण खरीदने के लिए चाँदनी चौक में “कूचा महाजनी” में गई। वहाँ आभूषण देखते-देखते हो सकता है कि मुझे फिट आया हो (जो मुझे पति ने बताया कि मैं कुछ झूम रही थी) तो दुकान का स्वामी जो पति का दोस्त भी है, उसने पूछा, 'गोयल साहब! भाभी जी को क्या हुआ?

“इन्हें जबरदस्त जॉण्डिस है। चाँदनी चौक में भी फुहारे पर जो बैठता है उसका भी इलाज करा चुके हैं और भी कई जगह इलाज करा चुके हैं, लेकिन जॉन्डिस है कि ठीक होने का नाम ही नहीं लेता।"

उसने अपना एक आदमी मेरे साथ भेजा। वहीं चाँदनी चौक में एक जगह है जिसे बोलते हैं 'कच्चा बाग'। वहाँ जो हकीम जी बैठते हैं, वो मरीज की आँखें देखकर दवा देते हैं। उन्होंने मुझे लिक्विड दवा दी, जिसकी कुछ बूंदें पानी में डॉलकर दिन में तीन बार लेनी थी। उस दवा को लेने का इतना अच्छा असर हुआ कि सात दिन में मेरा जॉन्डिस गायब हो गया और मुझमें काम करने की पूरी तरह से ताकत आ गई।

बेटी के विवाह के लिए जो सामान ले जाना था... उसके लिए अलग-अलग डब्बे बनाने थे जिस पर मैंने अलग-अलग डब्बों पर भात का सामान, फेरों का सामान, विदा का सामान वगैरा-वगैरा लिखकर लिस्ट भी लगा दी थीं, जिससे कि यह

पता रहे कि उन डब्बों में क्या-क्या सामान है। हमारे कुल 30 नग थे, जिन पर मैंने क्रमानुसार लिखा- 1/30, 2/30 और इसी तरह से फिर 30/ 30 जिससे कि एक डब्बा गायब हो जाए तो पता लग जाए कि कौन से नंबर का डब्बा छूट गया है। तीन-तीन लिस्ट अलग से बनाकर तीन जिम्मेदार लोगों को दीं। शादी खूब अच्छी तरह सम्पन्न हो गई। पूरे छह माह बाद मैंने गाड़ी में वापस आते हुए अनाज खाया कि अब मर भी जाऊँ तो चिंता नहीं है। लड़के की शादी तो हो ही जायेगी।

उसके बाद एक और अजीब तरह की बात शुरू हो गई। रबड़ जलने की गंध आनी शुरू हो गई। मुझे लगता था, कि कहीं बिजली के तारों में आग न लग गई हो। सारे घर की वायरिंग बदलवाई। कुछ दिनों बाद कूड़ा जलने की गंध आने लगी। कुछ महीने बाद कुछ जलाने के बाद उस पर आग बुझाने के लिए पानी डॉलने पर जो धुआँ निकलता है, उसकी गंध आनी शुरू हो गई। कुछ माह बाद मरे हुए चूहे जैसी गंध आनी शुरु हो गई। उसके बाद भूकंप जैसे झटके आने शुरू हुए। ऑफिस में ही कई बार ऐसा हुआ। मैं लोगों से कहती थी कि- अभी-अभी-अभी भूकंप आया था न।

वो कहते थे, कि नहीं मैडम! कोई भूकंप नहीं आया, जबकि मुझे पाँच बार झटके आये। ये तो बाद में पता लगा कि वो फिट थे। एक बार तो रात को इतने जबरदस्त भूकंप के झटके आए कि लगा जैसे पलंग छत से जा- जाकर टकरा रहा हो। मुझे नहीं मालूम था कि वे फिट के लक्षण थे। मैंने तो यही सोचा कि वाकई भूकंप आया है। सोच रही थी, कि पति को भी जगा दूँ और सुरक्षा के लिए घर से बाहर निकल जाएँ लेकिन पति घोड़े बेचकर सो रहे थे और मुझमें हिलने तक की हिम्मत नहीं थी।

यहाँ तक कि लघुशंका जाना था, किन्तु शरीर साथ नहीं दे रहा था, जिसकी वजह से बिस्तर भी गीला हो गया। सुबह पति से कहा कि जरा टी. वी तो चलाओ। रात को इतना जबरदस्त भूकंप आया था कि लगता है 10-20 मकान तो जरुर टूट गए होंगे। लेकिन दूरदर्शन पर ऐसी कोई खबर नहीं थी। घर से बाहर निकलकर देखा, लेकिन सभी मकान सही सलामत थे। समाचार पत्र में भी ऐसा कोई समाचार नहीं था। बड़ा आश्चर्य हुआ। इतना जबरदस्त भूकंप कि पलंग छत तक जाकर टकरा रहा था और नीचे गिर रहा था। मकान सही सलामत था। मुझे कमजोरी बहुत महसूस हो रही थी, लेकिन शुरु से ही आदत रही है कि जब तबियत ज्यादा खराब होती है तो अपने आपको काम में और भी ज्यादा व्यस्त कर लेती हूँ। यहाँ तक कि 105 बुखार में भी घर के काम में लगी रहती हूँ ।

कई वर्षों से मेरा जयपुर गोल्डन हॉस्पिटल में डॉ राजुल अग्रवाल का इलाज चल रहा था। वहीं पर डॉक्टर को दिखाया और सारी बातें बताईं। मेरा V.E.E.G किया गया। रिपोर्ट में आया कि मुझे अनेकों बार फिट पड़ चुके थे। अभी तक तो सिस्टीसरकोसिस की दवाएँ थीं। अब दवाइयों की डोज़ और भी ज्यादा बढ़ा दी गई। दवाओं से मुझे इतनी जबरदस्त खुजली शुरु हो गई कि हर वक्त खुजाती रहती थी। तीन साल परेशान रही। लाख इलाज किये पर सब बेकार। एक अन्य टेस्ट किया गया जिसका मुझे नाम याद नहीं आ रहा। उसके अनुसार दवाइयों से बेहिसाब रिएक्शन था। उसका इलाज कराया तब कहीं जाकर खुजली ठीक हुई।

"एक बार जब आँखों की रोशनी भी चली गई तब कहीं पता लगा कि मुझे फिट पड़ते हैं"।

जब भी फिट पड़ते थे अकेली होती थी। उस दिन रविवार था और पति घर में थे। यह बात सन् 2007 की है। मैं सुबह सो रही थी। वैसे रोजाना चार बजे उठने की आदत है। हो सकता है सोते-सोते फिट आया हो, जिसकी वजह से उठ नहीं पाई। पति अपने ऑफिस में बैठकर काम कर रहे थे। तब तक ये रिटायर हो चुके थे। इन्कम टैक्स और सेल्सटैक्स का काम करते थे। ज्यादातर काम परिचित लोगों का ही था। वैसे भी घर के साथ ही बहुत बड़ा डिस्ट्रिक्ट पार्क है।

पार्क में घूमने वाले परिचित आठ दस लोग तो कॉफी पीने के लिये आ ही जाते थे। उस दिन तो सभी निराश ही लौटे होंगे। सोचा होगा कि शायद मैं घर में ही नहीं हूँ, तभी आते ही कॉफी नहीं मिली। क्योंकि मेरी आदत थी, कि आते ही फटाफट कॉफी पिला दूँ। ये रोज का रूटीन था। उस दिन पड़ोस का लड़का अपने किसी काम से आया हुआ था। कॉफी नहीं मिली तो मुझे जगाने के लिए बैडरूम में आया और बोला! आंटी जी! अंकल जी बुला रहे हैं।

"आ रही हूँ", कहकर मैं दोबारा सो गई। थोड़ी देर बाद वो फिर आकर बोला- "आंटी जी उठो। अंकल जी बुला रहे हैं। आ रही हूँ," कहकर मैं फिर से सो गई। जब वो तीसरी बार जगाने आया तब मैंने पूछा:---

"टाइम क्या हुआ है?"

"8:00 बज गए"।

"ओ हो! मेरी तो दवाई का टाईम निकल गया"। जैसे-तैसे मैं उठी और बोझिल कदमों से चलती हुई ऑफिस में आई और कुर्सी पर बैठ गई। आवाज नहीं निकल रही थी। मरी हुई सी आवाज में बोली 'हाँ! क्यों बुलाया है?

"आज कॉफी वॉफी नहीं पिलाओगी क्या?"

"बना रही हूँ"। मैं मरी सी आवाज़ में बोली।

"लग रहा है तबीयत ठीक नहीं है तुम्हारी। मैं बनाऊँ?"

"नहीं! मुझे दवाई भी खानी है। मैं बना रही हूँ कहकर मैं बमुश्किल पाँच कदम भी नहीं चली थी, कि मुझे दिखाई देना बिल्कुल बंद हो गया। मैं चिल्लाई"

"मुझे कुछ नहीं दिख रहा। मुझे कुछ नहीं दिख रहा"।

"आँखें खोलो। आँखें खोलो"।

खोल रखी हैं। खोल रखी हैं। उसके बाद मुझे नहीं मालूम कि वो दोनों किस तरह से मुझे बेडरूम तक ले गए होंगे, क्योंकि जब मैंने कहा कि मुझे कुछ दिखाई नहीं दे रहा और इन्होंने कहा आँखें खोलो, आँखें खोलो... इस बीच क्या घटित हुआ, मुझे नहीं मालूम। उसके बाद मुझे इतना सुनाई दिया कि, बेड पर लेटो। बेड पर लेटो। मैंने हाथ से टटोलते हुए पूछा! बेड कहाँ है? बेड कहाँ है?

बाकी की बात मुझे पति से पता लगी कि आधा घंटे तक मैं बेहोश रही। पड़ोसी के लड़के ने मेरे बेटे को आवाज लगाई। इन्होंने ही मुझे बताया कि तुम्हारा पोता आधा घंटा रोता रहा और कहता रहा उठो दादी। उठो दादी। भगवान जी! मेरी दादी को क्या हो गया। वो आँसू बहाता रहा और तुम्हें झिंझोड़ता रहा। बड़ी देर बाद उसके आँसू तुम्हारी आँखों पर गिरे। तुमने थोड़ी सी हाथ की उँगली हिलाई तो हमारी जान में जान आई। फिर जैसे कैसे मैं और विकास तुम्हें जयपुर गोल्डन हॉस्पिटल ले गए। जिस डॉक्टर का इलाज चल रहा था, वो सिंगापुर गया हुआ था। दूसरे डॉ को दिखाया। ब्रेन की जो दवाइयाँ खाती थी उसकी छह गुणा डोज़ का इंजेक्शन लगाया। जब चेतना वापस लौट आई तो अगले दिन ओ.पी.डी में आने के लिए कहा।

जिस दिन फिट पड़ा था, उस दिन ममिया श्वसुर की उठावनी थी। उससे पहले दिन उनका देहांत हुआ था। हम दोनों की आदत है कि किसी के भी सुख- दुःख में जरुर शामिल होते हैं। हमारा मानना है कि खुशियाँ बाँटने से बढ़ती हैं और दुख बाँटने से कम होता है। उठावनी का फिक्स समय होता है। हमेशा सुबह नौ बजे से दस बजे तक(एक घंटे) की होती है। हम दोनों नहीं पहुँचे थे। मेरा देवर यह देखकर परेशान हो गया कि आज ऐसा क्या हुआ जो भाई साहब और भाभी जी नहीं पहुँचे। पति को फोन किया तो सारी बात का पता लगा। उठावनी खत्म होते ही देवर देवरानी व उनका बेटा सीधे हॉस्पिटल पहुँचे। मुझे बताया कि जब मैं घर आई तो आँखें मिचमिचाकर उन्हें पहचानने की कोशिश कर रही थी, लेकिन पहचान नहीं पा रही थी।

मामा जी की तेरहवीं में भी मैं नहीं जा पाई थी, क्योंकि डॉ संध्या चौधरी ने मुझे एम्स के लिये रैफर कर दिया था तो एम्स के चक्कर लगा रहे थे। एम. आर. आई की रिपोर्ट देखकर उन्होंने भी ऑपरेशन कराने की सलाह दी। अनेकों टैस्ट करवाए। दोबारा से एम्स में भी एम. आर. आई. कराने की सलाह दी। एम्स में बहुत लम्बी वेटिंग लिस्ट होती है, इसलिए इहबास हॉस्पिटल में कराने के लिए कहा। वहाँ थ्री डी टैस्ला मशीन है।

आश्चर्य की बात है कि उन मामी जी ने तेरहवीं से अगले दिन मुझे फोन किया और कहा कि, "राधा बेटा! तू कल नहीं आई, तब तेरी तबियत के बारे में पता लगा। अब तू कैसी है बेटा? हमारी तो कट गई। बेटा तेरे बारे में सुनकर बहुत दुःख हो रहा है। अपना ध्यान रख"।

जिसके पति की मृत्यु हो गई हो, वो मामी जी मेरी बीमारी के प्रति अपनी संवेदना प्रकट कर रही थीं, तो सोचो कैसा लगेगा? मेरे तो आँसू रुकने का नाम ही नहीं ले रहे थे। इतने शोकग्रस्त समय में भी उन्हें मेरी इतनी चिंता है। तब समझ में आया कि मैं पैसों से भले ही पूँजीपति नहीं हूँ, लेकिन मैंने रिश्तों की बहुत बड़ी पूँजी जमा की हुई है। खैर बात हो रही थी कि डॉक्टर संध्या ने अगले दिन मुझे ओ.पी.डी में बुलाया था। मुझसे एक प्रश्न किया कि "तुम आगे गिरती हो या पीछे"?

"पीछे" मैंने कहा, क्योंकि मैं कम से कम हजारों बार पीछे गिर चुकी थी।

एक बार मैं बेटे के साथ बाइक पर बैठकर घर के पास ही शॉपिंग सेंटर से बेटी की शादी के लिए कुछ शॉपिंग करने जा रही थी। बाइक को हल्का सा झटका लगा और मैं पीछे जाकर गिरी। तब तक मुझे नहीं पता था कि मुझे फिट पड़ते हैं। बेटे ने पूछा कि दुनिया आगे गिरती है और तुम पीछे गिरीं। मैंने कहा कि "झटका लगा था, इसलिए गिरी"।

"अरे झटका लगा था, तो मेरे ऊपर आगे गिरतीं? मैं तो नहीं गिरा। तुम गिरतीं तो मुझसे टकरातीं। मगर तुम पीछे लुढ़क गईं, यह बात समझ नहीं आई?"

"बेटा समझ तो मुझे भी नहीं आई। तू कह तो ठीक रहा है, कि झटका लगा तो तेरे साथ टक्कर लगती। पीछे कैसे गिरी?" पीछे गिरी सोच-सोच कर बड़ी हँसी आई। घर आकर भी यह सोचकर हँसी आती रही। मेरा ऑफिस घर से मात्र 5 मिनट की दूरी पर था, लेकिन बीच में एक सड़क ऐसी आती थी, जिसे पार करना पड़ता था। सड़क पार करने में मुझे बहुत घबराहट होती थी। मैं एक पेड़ के पास खड़ी होकर वाहनों के जाने का इंतजार करती थी। कभी-कभी कोई वाहन बहुत तेजी से

गुजरता था, तो पीछे पेड़ से टकराती थी। एक बार नहीं हजारों बार हो चुका था। शौचालय में भी हर बार पीछे जाकर टकराती थी।

उसका दरवाजा अंदर की तरफ खुलता है। अंदर प्रवेश करके दरवाजा बंद करके जब पॉट पर बैठने के लिये मुड़ती थी, तो सीधी पीछे की तरफ गिरती थी। शुक्र है कि इंग्लिश स्टाइल का बना हुआ है। सीधी फ्लश की टंकी से टकराकर पॉट पर जाकर गिरती थी। शुक्र है कि शौचालय भी इतना बड़ा नहीं है कि इधर उधर गिरूँ। ऐसा तो हर रोज ही और हर बार ही होता था। यहाँ तक कि ऑफिस में भी होता था। मुझे खुद पर हँसी आती थी, कि ऐसी बेवकूफी रोज क्यों हो जाती है। कोई मेरा मजाक न बनाए इस वजह से किसी से कहती भी नहीं थी।

बात हो रही थी कि हम ओ. पी. डी में दिखाने गए। मैं अपना सारा रिकॉर्ड भी साथ ले गई थी। जितने भी सिटी स्कैन, MRI, VEEG, EEG हो चुके थे, वे सब ले गई थे। डॉक्टर संध्या ने वे सभी देखे और कहा कि इनका ऑपरेशन करना बहुत जरूरी है और ऑपरेशन बहुत क्रिटिकल है। अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान में ऑपरेशन कराना बेहतर है और मुझे एम्स के लिये रैफर कर दिया। सन् 2007 से मेरा एम्स का इलाज शुरू हुआ। वहाँ भी डॉक्टर ने मेरा सारा रिकॉर्ड देखा। देखने के बाद उनको भी यही समझ आया कि ऑपरेशन होना बहुत जरूरी है लेकिन एम्स में एक बात अच्छी है कि वे लोग फौरन ऑपरेशन के लिए नहीं लिखते। उनकी बाकायदा कांफ्रेंस होती है। कई डॉक्टर उन सभी रिपोर्ट्स को देखते हैं और फिर कोई निर्णय लेते हैं। मेरी सभी M.R.I, E.E.G, V.E.E.G, रख ली गईं। चार बार कॉन्फ्रेंस में उस पर विचार विमर्श किया गया। मेरी डॉक्टर ने मुझे एक ही बात कही कि सभी डॉक्टर इस बात पर एकमत हैं कि आपका ऑपरेशन होना चाहिए, लेकिन यह बात भी सच है कि ऑपरेशन होने के बाद भी केवल 0.5 परसेंट ही फर्क पड़ेगा। 99.5% बीमारी फिर भी रह जायेगी। और दूसरी बात... आपकी बीमारी इतनी डीप में है कि रिस्क रेट बहुत ज्यादा है। पैरालाइज्ड भी हो सकती हो। विज़न भी जा सकती है। मेरा आपको अनऑफिशियली यह सजैशन है कि आप रोजाना प्राणायाम किया करो। बीमारी ठीक भले ही न हो, लेकिन काबू में जरूर रहेगी। मैं तो पहले से ही रोजाना एक घंटा प्राणायाम करती थी। अब रोजाना शाम को भी करने शुरू कर दिए। फिर मैंने ही कहा कि:- "डॉक्टर साहब 0.5% के लिए मैं ऑपरेशन किसलिए कराऊँ? उससे तो यही बेहतर है कि मैं दवाइयाँ खाती रहूँ और प्राणायाम करती रहूँ और मस्ती से जीती रहूँ। जब बीमारी ठीक ही नहीं होनी तो चिंता किस बात की और किसलिए सोच-सोच कर दिमाग खराब करना। जितने दिन की जिंदगी है, उसको तो

हँसी खुशी आराम से गुजार लूँ और उसे अपने सपने पूरा करने में लगाऊँ और अपने काम में जुट जाऊँ।"

खैर डॉक्टर ने मेरी बात मान ली। वह मेरी बात और मेरी इच्छाशक्ति देखते हुए प्रभावित भी बहुत ज्यादा हुईं उसके बाद तो यह हाल था कि एक बार इंडिया हैबिटेट सेंटर में एक सेमिनार होना था जिसमें भारतवर्ष के सभी डॉक्टरों को शामिल होना था उसमें कुछ मरीज ऐसे बुलाए हुए थे जिनके बच्चों को बीमारी थी और कुछ मरीज ऐसे बुलाए हुए थे जिनको खुद बीमारी थी और जो बीमारी के एहसास से भी मरे जा रहे थे।तीन माता पिता ऐसे थे जो यह सोचकर बच्चों का इलाज करवा रहे थे कि हमें किसी पूर्वजन्म के पापों के कारण यह बीमारी भुगतनी पड़ रही है तो इसे हँसकर क्यों ना झेलें।रोने से क्या बीमारी ठीक हो जायेगी।

डॉक्टर को मेरी बातचीत से शायद ऐसा लगा कि मुझे लिखने का शौक है।

पता नहीं उन्हें यह आभास कैसे हुआ कि मुझमें कोई टैलेंट भी है। उन्होंने ही मुझसे कहा कि इण्डिया हैबिटेट सैन्टर में एक सेमिनार हो रहा है और मैं चाहती हूँ कि तुम स्टेज पर कुछ बोलो। क्या तुम स्टेज पर कुछ बोल सकती हो?

खैर यह बात मेरे बजाय इन्होंने ही कही कि हाँ! हाँ! बोल सकती हैं।इन्हें तो स्टेज पर बोलने का बस मौका चाहिए।

डॉ ने मुझसे पूछा कि तुम किस विषय पर बोलना चाहोगी? मेरा उत्तर था कि मेरा विषय होगा कि *मरीज बीमारी से नहीं अपितु बीमारी के अहसास से ज्यादा मरता है।

डॉक्टर ने कहा "यह तो बहुत अच्छा टॉपिक है।ठीक है आप इसी पर बोलना।जिस दिन सेमिनार था, मैंने उस दिन इसी टॉपिक पर बोला।वहाँ सिस्टम यह था कि पहले जूनियर डॉक्टर ने मेरी सारी बीमारी बताई और उसके बाद मैंने बोलना शुरू किया। मेरे बोलने के बाद स्टेज पर जो व्यक्ति बैठा हुआ एंकरिंग कर रहा था, उसने बकायदा मुझसे हाथ मिलाया।मेरी तारीफ की।पूरा हॉल तालियों से गूँज गया। यह 2008 की बात है। उस समय मुझे एक हजार रूपये,एक बहुत खूबसूरत फोटो फ्रेम व एक सर्टिफिकेट मिला व चार फोटो भी खींची गईं जो बाद में मुझे डॉक द्वारा भेजी गईं। कार्यक्रम के बाद लंच था।अलग-अलग शहरों से जो डॉक्टर्स आए हुए थे, उन्होंने आकर मुझसे हाथ मिलाया और कहा कि "We can't speek Hindi, We can't understand Hindi, but your expressions were so impressive, that we understood everything. In which way u manage your disease?"

कई मरीजों के माता-पिता ने भी मुझसे यही सवाल किया कि आपको देखकर तो बिल्कुल नहीं लगता कि आप को इस प्रकार की तकलीफ है। डॉक्टर ने जैसा कि बताया कि आपको एम्स के भी सभी डॉक्टर्स आपरेशन के लिये कह चुके हैं। डॉक्टर ने हमारे बच्चों को तो यह कहा हुआ है कि गैस पर कोई काम नहीं करना। चाकू का काम नहीं करना। पानी के पास नहीं जाना। वाशिंग मशीन नहीं चलानी। मिक्सी नहीं चलानी। मैंने कहा कि मुझे भी डॉक्टर ने यही सब कुछ बोला हुआ है लेकिन मैं सारे ही काम करती हूँ, क्योंकि नहीं करूँगी तो हर वक्त यही सोचती रहूँगी कि मैं बीमार हूँ। मैं तो बल्कि जब ज्यादा बीमार होती हूँ तो ज्यादा काम करती हूँ। फिर मैंने उन्हें अपनी कटी हुई ऊँगली दिखाई जो गलती से मिक्सी से आधी कट गई थी।

हाँ एक बात मैं बताना भूल गई। यह निश्चित हो चुका था कि मुझे ब्रेन ट्यूमर है, किंतु मेरी शक्ल देखकर ऐसा नहीं लगता था कि मुझे ऐसी बीमारी है। घरवालों को लगता था कि मुझे मालूम नहीं है किंतु मुझे मालूम था लेकिन मैंने कभी इसलिए जिक्र नहीं किया क्योंकि मुझे बेटे की शादी करनी थी। यदि मैं इस बात का जिक्र करती और पड़ोसियों को या रिश्तेदारों को पता लग जाता तो कोई भी अपनी लड़की देने से पहले यदि तहकीकात करता तो उसे पता लग जाता तो मेरे बेटे की शादी में दिक्कत आती। कोई भी माँ-बाप उस घर में अपनी लड़की को नहीं देना चाहेगा जहाँ पर सास इतनी बीमार हो कि उनकी बेटी को सास की तीमारदारी करनी पड़े। हालाँकि मैं सारे काम अन्य लोगों से ज्यादा ही करती थी और कभी किसी को यह पता नहीं लगा कि मुझे ब्रेन ट्यूमर है। यह तो बेटे की शादी के कई वर्षों बाद यानी कि सन् 2009 में तब पता लगा जब मेरे दामाद की 2/3/99 को मृत्यु हुई और मेरी तबियत ज्यादा खराब होने की वजह से मुझे ऑपरेशन के लिये दाखिल कर लिया गया।सौ घण्टे तक बिना दवा खिलाए सिर में ढ़ेरों तार लगाकर मानिटरिंग की गई। नित्य कर्म के लिये मशीन में से प्लग निकालकर अटैण्डैण्ट बाहर मशीन लेकर खड़ा रहता था। सौ घण्टे में सात फिट पड़े। ऑपरेशन के लिये फार्म पर हस्ताक्षर करने के लिए मैंने सभी को मना कर दिया।मैं जीते जी अपने देहदान को तैयार थी जिसे डॉ ने नहीं माना। लम्बी कहानी है। अलग से लिखूँगी।

इतने वर्षों में मेरी बहू भी यह जान चुकी थी कि मेरी सास में अभी भी इतनी हिम्मत है कि वह 40 लोगों का खाना अकेले ही बना सकती हैं।

कई वर्षों से हल्का हल्का बुखार रहता है जिसके लिये गिलोय का पानी उबालकर पीती हूँ।बार बार जॉण्डिस हो जाता है तो पीपल के पत्ते उबालकर उनका

पानी पी लेती हूँ। दायाँ हाथ कई बार पैरालाईज़्ड हो जाता है। उसके लिये बेटे को एक्यूप्रैशर के प्वाइण्ट्स सिखाए हुए हैं। इस साल जनवरी 2019 में तो दिन में कई कई बार फिट पड़ रहे हैं। तीन गर्म स्वेटर, दो गर्म पजामी, दो कनटोप, तीन कम्बल लपेटकर भी कँपकँपाती रहती हूँ। हालात यह हो गये हैं कि जैसे तैसे विश्व पुस्तक मेले में गई थी लेकिन तभी से बीमार पड़ी हूँ। यहाँ तक कि अपनी पुस्तक के विमोचन में भी नहीं जा पाई। लेकिन हिम्मत अब भी नहीं हारी है।

हौसलों में उड़ान है और उम्मीदें अभी बाकी हैं।

इतने वर्ष बीतने के बाद भी आज तक दाईं तरफ से खाना नहीं खाया जाता। बहुत दर्द होता है। कई महीने से दायाँ हाथ भी बेजान सा है। उसे ऊपर नहीं उठा पाती। टाईप करने के लिये बड़ी सी ट्रे को पैरों पर रखकर उसमें मोबाईल रखती हूँ। पैर सैण्टर टेबल पर पसारती हूँ। उससे हाथ ट्रे पर टिक जाता है और टाइप कर लेती हूँ। यहाँ तक कि खाना भी आधी बार बायें हाथ से खाती हूँ और वो भी बिस्तर पर स्टडी टेबल पर रखकर। घर के सारे ही काम करती हूँ। यहाँ तक कि कपड़े धोने के लिये मेड लगाने के बावजूद चादरें, तौलिये, परदे मैं खुद धोती हूँ और खुद पानी में निकालती हूँ। झुकने से बुखार हो जाता है इसलिये वाशिंग मशीन के पास ही एक कुर्सी रखी हुई है। मशीन चलाकर कुर्सी पर बैठती हूँ और छाँटकर कपड़े उसमें डालती जाती हूँ। मशीन सेमी ऑटो है। सभी ने बहुत कहा कि फुल ऑटोमैटिक ले लो। जानती हूँ कि उसमें पानी बहुत ज्यादा बरबाद होता है। मैं पानी बर्बाद करने के सख्त खिलाफ हूँ, इसीलिए कपड़ों को पानी से भी खुद ही निकालती हूँ और कपड़े धोने से बचा पानी शौचालय साफ करने व घर के बाहर फैली मिट्टी पर छिड़काव करने व पोंछा लगाने में इस्तेमाल करती हूँ। घर के सभी कामों के लिये अपना सिस्टम बनाया हुआ है। रसोई में फोल्डिंग स्टूल रखा हुआ है। उस पर बैठ कर आटा गूँथना, सब्जी काटना व खाना बनाना जैसे सारे काम करती हूँ ताकि आदत भी बनी रहे और इसी बहाने थोड़ी कसरत भी हो जाए। बहू के ऊपर काम नहीं थोपा हुआ। रसोई अलग-अलग है। मैं अपने सब काम अपने हिसाब से कर लेती हूँ। खाना बाएँ हाथ से खा लेती हूँ। दायाँ हाथ कई बार पैरालाइज्ड हो चुका है। एक्यूप्रेशर का दबाव देकर उसे ठीक करती हूँ। बेटे को भी एक्यूपैशर के प्वाइण्ट्स सिखा रखे हैं। हाथ पैरालाईल्ज्ड होने पर उससे भी एक्यूपैशर कराती हूँ। जब बिल्कुल ही बिस्तर से लग जाती हूँ तो बहू बिना कहे खुद ही कर देती है।

आजकल मुझे जॉण्डिस की फीलिंग हो रही है। उल्टी की फीलिंग होती रहती है। जब मर्जी दस्त लग जाते हैं। खाना खाने की बिल्कुल इच्छा नहीं होती। जबरदस्त कमजोरी महसूस हो रही है। सोने में सुहागा यह कि घर में वाइटवॉश हो रहा है। हाँलाकि मैं बीमारी में भी काम करना कभी नहीं छोड़ती। 1 अप्रैल को पड़ौस में बड़ा भारी उत्सव मनाया था। बहुत आग्रह से कहकर गईं थीं। वहाँ भी गई थी। सारा दिन वहाँ बीता। 9 अप्रैल को एम्स की अपॉइंटमेंट थी। घर से नौ बजे गई और चार बजे लौटी। अकेले ही जाना पड़ा क्योंकि पति और बेटा पड़ौस के शोक संतप्त परिवार में आने जाने वालों के बैठने की व्यवस्था में व्यस्त थे।

इस बार फिट भी काफी जल्दी-जल्दी आ रहे हैं। डॉक्टर ने मेरी दवाई की डोज़ भी बढ़ा दी है। एम.आर.आई और ई.ई.जी कराने के लिए लिख दिया है। ई.ई.जी तो एम्स से ही होनी है, उसकी डेट ले आई हूँ। एम.आर.आई के लिये शाहदरा के इहबास हॉस्पिटल जाना पड़ेगा, क्योंकि थ्री डी टैस्ला मशीन से होनी है। बाकी के सोलह टेस्ट और भी लिखें हैं जो कराने हैं।

दवाइयों का इंडैण्ट हमें अपनी डिस्पैंसरी में देना होता है। पहले डॉ को दिखाने वाली लाईन में लगो। फिर डॉ से इडैण्ड लिखवाओ। फिर दूसरे कमरे में जाकर उस पर स्टैम्प लगवाओ। फिर अन्य काउण्टर पर जाकर नम्बर डलवाओ।
उसके बाद उसकी तीन-तीन फोटोकापी करवाकर लाओ। दोबारा डिस्पैंसरी में जमा कराने जाओ। फिर दवाओं के लिये पाँच-छह चक्कर लगाओ। तब कहीं जाकर दवाएँ पाओ। और कभी-कभी तो तब भी आधी अधूरी ही पाओ।

घर से लिस्ट बनाकर ले जाती हूँ कि हर दवा के कितने-कितने पत्ते होने चाहिएँ। उन्हें गिनने व जाँचने में ही आधा घंटा बीत जाता है। मैं ये सारे काम स्वयं करती हूँ। अभी किसी पर बोझ नहीं हूँ। एम.आर.आई और ई.ई.जी के लिये किसी का साथ होना जरूरी है। अकेले जाने पर हॉस्पिटल वाले ये टैस्ट करने का जोखिम नहीं लेते। हाँलाकि मुझे डर नहीं लगता। न जाने कितनी ही बार ब्रेन का एम.आर.आई, ई.ई.जी व सिटी स्कैन हो चुका है। स्पाईन व घुटनों की एम.आर.आई हो चुकी है। दोनों घुटनों का रिप्लेसमैण्ट हो चुका है। लेकिन कुछ सोचकर ही उन्होंने ये नियम बनाये होंगें।

-राधा गोयल, दिल्ली

व्यक्तित्व दर्पण

नाम - राधा गोयल
पति - श्री श्याम सुंदर गोयल
जन्म - 03/08/1948
पता - एफ. ब्लॉक, विकासपुरी, नई दिल्ली - 110018
ई मेल - radhagoyal222@gmail.com
शिक्षा - बी.ए.
विधा -
कार्यक्षेत्र - समाज सेवा, स्वतंत्र लेखन।
प्रकाशन 1. काव्य मंजरी (एकल काव्य संग्रह)
2. पाती प्रीत भरी (एकल पुस्तक)
3. निनाद (काव्य संग्रह)एवं आक्रोश (काव्य संग्रह) प्रकाशाधीन।
अनेक सांझा संकलनों में प्रकाशन
सम्मान - विभिन्न संस्थाओं द्वारा अनेक सम्मान से सम्मानित।

यदि आप अंग्रेजी में हस्ताक्षर करते हैं तो निवेदन है कि 'हिन्दी में हस्ताक्षर करें', आपकी यह छोटी-सी कोशिश हिन्दी को राजभाषा से राष्ट्रभाषा बनाने में अमूल्य योगदान देगी ।

अन्तरा शब्दशक्ति
www.antrashabdshakti.com
१५, नेहरु चौक, मेन रोड वारासिवनी,
जि. बालाघाट (म.प्र.) पिन ४८१३३१,
संपर्क- ९४२४७६५२५९,
अणुडाक: antrashabdshakti@gmail.com
978-93-86666-71-0
मूल्य- 60/-